तिथि
5.4.2020

TOPIC SL. No.
शीर्षक क्रम सं- 52

स्नातक प्रथम वर्ष
हिन्दी (प्रतिष्ठा)
B.A Hindi (Hons.)
D 1
पत्र - प्रथम - 1

लघुत्तरीय प्रश्न

प्र02 हिन्दी-साहित्य में नाथ-संप्रदाय के महत्व को रेखांकित कीजिए।

उ02 भोग की प्रवृत्ति के फलस्वरूप सिद्धों का पतन हो गया। उनकी शब्दावली के प्रतीकार्थ को तिलांजलि दे दी गई और शब्दावली में अभिधार्थ-लौकिक अर्थ को प्रधानता दे दी गई। फलस्वरूप वामाचार का खंडन करते हुए और गोरखनाथ ने एक नये संप्रदाय नाथ-संप्रदाय की स्थापना की। यह संप्रदाय वस्तुतः सदाचार मूलक था। नाथ शैवधर्म के अनुयायी थे। सम्मानित नाथों में प्रमुख हैं- गोरखनाथ, जलन्धरनाथ इत्यादि।

साधना की दृष्टि से नाथ-संप्रदाय तांत्रिक था। इनकी तांत्रिक साधना हठयोग पर आधारित थी। इसमें योगासनों का विशेष महत्व था। वे ईश्वरवादी थे।

नाथ-साहित्य में गुरु महिमा, वासना-निग्रह आदि का वर्णन किया गया है।

सामाजिक दृष्टि से नाथ-साहित्य सुधारवादी है और ऊँच-नीच की भावना से परे है।

गृहस्थ-धर्म के प्रति उपेक्षा इस संप्रदाय की सबसे बड़ी कमजोरी है।

Scanned with CamScanner

नाथ पंथी साहित्य की भाषा प्राचीन हिंदी

का पूर्वी रूप है। निरंतर भ्रमण करने वाले नाथों की भाषा में विभिन्न प्रदेशों के शब्द आ गये हैं। इसमें देशज शब्दों की बहुलता है - यह खिचड़ी भाषा कहलाई। हिन्दी गद्य का प्राचीनतम रूप हमको गोरखपंथी ग्रंथों में प्राप्त होता है। गुरु गोरखनाथ को हिन्दी गद्य का प्रवर्तक माना जाता है।

नाथ-संप्रदाय का विकसित रूप ही संत काव्यधारा है। जिसके प्रवर्तक कबीर हुए। संतों को वस्तुतः नाथों द्वारा बनी-बनाई भूमि मिल गई।

नाथपंथी कवियों ने लोक भाषा में छोटे-छोटे छंदों में अपनी साधना का वर्णन किया और उपदेश दिये। इनके साहित्य में भी सिद्ध-साहित्य की भाँति धार्मिक सिद्धांतों की बहुलता है। दार्शनिक विवेचन की प्रधानता के कारण संत-काव्य में शांत रस की प्रधानता है।

लौकिक शब्दावली में इसके प्रतीक बहुत सुंदर बने पड़े हैं। प्रतीक-विधान परक छंदों में इनकी चमत्कारप्रियता के दर्शन होते हैं। एक उदा० देखिए -

"तुंबी में तिरलोक समाया त्रिवेणी रिव चंदा।
बूझो रे बंभ गियानी, अनहद नाद अभंगा।"

समग्र रूप से यह भारत के धार्मिक वातावरण को शुद्ध और उदात्त बनाने में सहायक हुआ।

डॉ० आरती प्रसाद
सह प्राचार्य, हिन्दी
आर०एस० कॉलेज, पण्डौल
9955839898

Scanned with CamScanner